पर कुछ बार अनौपचारिक बातचीत भी हुई। उनकी खिलखिलाहट, उनकी बातें मासूम बच्चे की सरल और तिलिस्मी लगती हैं। ....उनकी बातें यूँ जैसे नदी में हौले-हौले बह रही हो कश्ती और कानों में गूंज रहा हो तराना....। उनकी बातचीत में उनके शिखर का कोई गुरूर नहीं झलकता।

गर्मियों के वे बोझिल दिन थे जब एम.ए. के इम्तिहान हो चुके थे। उमस भरी खाली दुपहरिया। विविध भारती के साथ या किताबों के साथ गुजरती। कूलर के तेज शोर में भी विविध भारती सुरों की पालकी पर सवार ध्वनि तरंगों के माध्यम से मद्धम मद्धम हमारे दिलों को, हमारे वजूद को सहलाते रहती। वह तनाव के दिन थे कि अब पढ़ाई खत्म.....नौकरी की तलाश शुरू.....।

छोटे शहरों में लड़कियों की पढ़ाई के बाद घरवालों पर विवाह का बोझ बढ़ जाता है कि बस अब जैसे-तैसे इसे दूजे घर भेजकर जिम्मेदारी से निवृत हुआ जाए। लेकिन हमारी आस्था विवाह में कतई नहीं थी, बल्कि किसी भी सूरत में रोजगार पाना मकसद था। उन सूनी वीरान दुपहरी में जब कुल्फी आइसक्रीम और काली जामुन वाले बांग देते हुए गली से गुजरते तो उस वक्त हमारा मन विचारों और नौकरी की चिंताओं के घने जंगल में तपते पेड़ की तरह धूप से चनमना रहा होता.....। ऐसे में विविध भारती से प्रसारित हो रहे 'एक फनकार', 'मनचाहे गीत', 'लोक संगीत', 'अनुरंजनी', 'रंग-तरंग'जैसे कार्यक्रम हमें नीम, आम और जामुन के पेड़ की तरह छांव देते। तब हमारे मन में यह ख्याल कभी नहीं आया कि एक दिन इन्हीं उद्घोषकों की तरह इसी घर नहीं.....इसी शहर नहीं....पूरे देश नहीं बल्कि विदेशों में भी गूंजेगी मेरी आवाज। इसी विविध भारती से मिलेगा सृष्टि का अलौकिक जादुई प्यार। अजनबियों के स्नेह के महासागर में गोते लगाऊंगी मैं।

इलाहाबाद में दीदी की शादी थी। उनकी विदाई का समय था। दीदी की आंखों में आंसू....मन में नए संसार के मखमली सपने... मां का आंचल बिछोह से भरा था... लाउडस्पीकर पर शारदा सिन्हा के गाए यह दो विदाई गीत बार-बार बज रहे थे...कहे तोसे सजना– फिल्म 'मैंने प्यार किया' और 'बाबुल का घर छोड़ना'। शारदा सिन्हा के विदाई गीत की पीड़ा में डूबा सुर....सबकी आंखें नम कर रहा था। बरसों बाद विविध भारती के स्टूडियो में शारदा सिन्हा.... जिनके गाए विदाई गीतों के साथ हम रोए थे, जिनके गाए छठ गीतों के साथ मुस्कुराए थे....वही गायिका मेरे सामने स्टूडियो में मेरे बेहद करीब बैठी थी। रोमांच से भर आया था मेरा मन। आज के मेहमान कार्यक्रम की बड़ी नायाब रिकॉर्डिंग हुई। उन्होंने अपनी सहजता सरलता और स्नेह से पूरे विविध भारती परिवार का मन मोह लिया।

विविध भारती से जुड़ी अनगिनत यादें, अनगिनत घटनाएं हैं। वो धमनियों में बह रहे खून को जमा देने वाली राजस्थान की ठिठुरती सर्दी थी। जब रामगढ़, जैसलमेर और जोधपुर की यात्रा पर हम विविध भारती की टीम के साथ गए थे। उस बरस विविध भारती की 'स्वर्ण जयंती' मनाई गई थी। इसी मौके पर हमारी टीम बीएसएफ यानी सीमा सुरक्षा बल के फौजियों की विशेष रिकॉर्डिंग के लिए वहां पहुंची थी। उनसे इंटरव्यू करते हुए कई बार आंखें नम हुईं। कई बार माइक्रोफोन थामे हुए हाथ कांपे। कई बार हम स्तब्ध हुए, निशब्द हुए कि कैसा निर्जन, कैसा विकट जीवन है इन फौजी साथियों का.....जिनकी सुरक्षा की छत्रछाया में हम बेलौस चैन की सांस लेते हैं। गजब का रोमांच हो रहा था जब रेगिस्तान की धूल भरे कच्चे दूर तक वीरान रास्तों से फौजियों की विशेष गाड़ी में सवार हम अपनी टीम के साथ रामगढ़ के उस सिरे तक पहुंचे थे, जहां आम जनता नहीं पहुंच सकती।

वहां एक तरफ हमारे अपने वतन की मिट्टी....तो उस पार पाकिस्तान की सीमा...भारत का तिरंगा सीना ताने शान से लहरा रहा था। भारत-पाकिस्तान की सीमा पर हम बेखौफ खड़े थे...उन एहसासात को अल्फाज़ में बयां करने जरा मुश्किल है..सचमुच हमारे रोंगटे खड़े हो गए थे, रोमांच से हुई सजल आंखों के कैमरे में उस दृश्य को कैद कर लिया था, जो आज भी मन में जीवंत है और हमें जोश से भर देता है। वहां जाकर पता चला कि फौजी साथियों की संगिनी और कोई नहीं सिर्फ विविध भारती है।

सूरज थक कर जब रेत के टीलों के पीछे छुपने जा रहा था, तब हम बड़े-बड़े बंकरों टैंकों और बंदूकों के बीच खड़े थे। युद्ध में इस्तेमाल की जाने वाली इन रोमांचक और खतरनाक सामग्रियों को निडर होकर छू रहे थे। और दूर कहीं फौजियों की छावनी से विविध भारती गूंज रही थी। सचमुच उस आह्लाद को शब्दों में कह पाना असंभव है। छावनी में जाकर फौजियों के बीच उनके अनुभव, उनकी आपबीती रिकॉर्ड कर हम खुद जैसे खजाना बन गए थे, जो अनमोल धरोहर के रूप में विविध भारती के संग्रहालय में आज भी संग्रहीत है। वहां की गयी बहुत सारी रिकॉर्डिंग का प्रसारण 'सखी सहेली' और विशेष अन्य कार्यक्रमों में हुआ। फौजियों की पत्नियों की आत्मकथाएं, उनके अपने डर, साहस, हिम्मत.... फौजी साथियों की शहादत की खबरों के बाद का दृश्य....उनकी पीड़ा....उनका पारिवारिक जीवन....सब कुछ उनके शब्दों में हमारी टीम ने रिकॉर्ड किया। हमारी टीम में थे राकेश जोशी, यूनुस खान, अशोक जी, कमल जी, शकुंतला जी, कमलेश जी और रेडियो सखी ममता सिंह। इस टीम के कप्तान थे श्री महेंद्र मोदी।

अगले दिन तमाम रिकॉर्डिंग के बाद हम जैसलमेर के रेगिस्तान में थे। रेत पर सूरज की किरणें सोना बिखेर कर अठखेलियां कर रही थीं। हमारी आंखें चौंधिया रही थीं। वहीं ऊँटों की कतार में से एक-एक ऊंट पर हम सवार हो गए। रेत के ऊंचे-ऊंचे टीलों यानी सम तक पहुंचने के लिए।

एक ऊंट पर मैं और मेरे पति यानी साथी उद्घोषक यूनुस खान बैठे। पीछे के